पिंजरे का पंछी

बहुत प्राचीनकाल की बात है आभा नगरी पर राजा वीरसेन का राज्य था। उसकी दो रानियाँ थीं, वीरमती तथा चन्द्रावती। वीरमती बड़ी साहसी, चालाक और ईर्ष्यालु प्रकृति की थी, जबकि चन्द्रावती बड़ी सरल, पति-परायण एवं धार्मिक विचारों की थी। वीरमती निःसन्तान थी। चन्द्रावती का पुत्र था चन्द्रकुमार। चन्द्र बहुत ही सुन्दर, बुद्धिमान, साहसी और माता-पिता का विनीत था।

युवा होते-होते चन्द्रकुमार बहत्तर कलाओं और सभी विद्याओं में दक्ष हो गया। विद्याध्ययन कर वापस लौटने पर राजा वीरसेन ने उसका आभा नगरी के युवराज पद पर अभिषेक कर दिया।

एक बार बसन्त उत्सव के समय राजा वीरसेन अपने परिवार के साथ उद्यान में गये। हजारों नागरिक बालक, बालिकाएँ वहाँ तितलियों, मोर आदि पक्षियों के साथ खेल रहे थे। नन्हें-नन्हें शिशु माताओं की गोद में किलकारियाँ कर रहे थे। यह दृश्य देखकर रानी वीरमती एकदम उदास होकर सोचने लगी–

इन्हीं विचारों में खोई रानी वीरमती की आँखों से आँसू टपक पड़े।

रानी को रोते देखकर उस वृक्ष की डाल पर बैठा एक लाल किलंगी वाला तोता मानव-वाणी में बोला–

तोते की आवाज सुनकर रानी ने आश्चर्य से ऊपर देखा। तोता बोला–

रानी बोली–

भाई शुकराज, तुम ज्ञानी हो तो मेरा दुःख भी जानते होंगे। फिर बताओ मैं क्या करूँ?

वीरमती, सन्तानहीनता का काँटा तेरे कलेजे में चुभ रहा है। इसका उपाय मैं तुझे बताता हूँ।

फिर शुकराज लालमन बोला–

रानी, ध्यान से सुनो। इस वन की उत्तर दिशा में एक बावड़ी है। मेरे बताये अनुसार चैत्री पूनम की रात को तुम वहाँ जाकर नीलम परी से अपना काम निकलवा सकती हो, परन्तु होशियारी से।

तोता यह कहकर उड़ गया। रानी वीरमती वापस महलों में आकर योजना बनाने लगी।

चैत्री पूनम की संध्या होते ही वीरमती शुकराज लालमन के बताये अनुसार बावड़ी के पास पुराने मन्दिर में जाकर छुप गई। थोड़ी देर बाद आकाश से रुनझुन करती परियाँ उतरीं। पहले तो परियों ने मिलकर उस चाँदनी रात में नृत्य किया, फिर सभी ने अपने वस्त्र उतारकर वृक्ष पर रख दिये और बावड़ी में स्नान करने लगीं। वीरमती इसी मौके की खोज में थी।

हूँ, ये ही चमचमाते वस्त्र नीलम परी के हैं। इन्हें लेकर मन्दिर में छुप जाऊँ, तब यह मेरे बस में आयेगी।

रानी वस्त्र चुराकर मन्दिर में जाकर छुप गई और मन्दिर के दरवाजे अन्दर से बन्द कर लिये।